“सांगीतिक विधाओं के परिप्रेक्ष्य में रस तत्व के सैद्धांतिक आलेखन, अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन”

“Saangitik Vidhaao Ke Paripreksh Me Ras Tattv Ke Saiddhaantik Aalekhan, Anubhuti, Evam Abhivyakti Ka Vishleshanaatmak Adhyayan”

फेकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्टस

धि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बरोड़ा

पी.एच.डी. हेतु प्रस्तुत

शोध सारांश

<u>शोधकर्ता (Researcher)</u>

निर्झरी अवनीश ठक्कर

रजिस्ट्रेशन नं. : FOPA / 60 रजिस्ट्रेशन दिनांक : ३१ दिसंबर २०१६

<u>मार्गदर्शक (Guide)</u>

प्रो. राकेश महिसुरी

प्रोफेसर इन इंस्ट्रुमेंटल म्युझिक

डिपार्टमेंट ऑफ़ इस्ट्रुमेंटल म्युझिक

फेकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्टस

धि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बरोड़ा

२०१६-१७

<u>प्रस्तावना</u> <u>(Preface)</u>

उत्क्रांति के इतिहास की ओर देखें, तो मानव अपने विकास के अत्यंत शुरुआत के स्तर से ही वैयक्तिक जीवन की अपेक्षा सामाजिक जीवन को अधिक अपनाता हुआ दिखाई देता है। अपने इस सामाजिक जीवन के अंतर्गत उसने अपनी विभीन्न संवेदना, भावना, विचार, कल्पना, इत्यादि अपने साथियों के समक्ष अभिव्यक्त किया। भाषा के निर्माण से पूर्व ही उसने निजी अनुभूति की अभिव्यक्ति के कई माध्यम अजाग्रत रूप से उपयोग में ले लिए थे। जैसे मुस्कुराना, रोना, चिल्लाना, प्यार से थपथपाना, इशारे तथा चेहरे के हावभाव से समज़ाना, रेखा, आकृति आदि से कुछ स्पष्ट करना, इत्यादि।

मनुष्य के सांस्कृतिक विकास के साथ साथ यह भावाभिव्यक्ति का ढंग भी परिष्कृत हुआ और क्योंकि सौंदर्य मनुष्य की एक अनिवार्य, सनातन आवश्यकता है, अभिव्यक्ति के ये माध्यम प्रायः अजाग्रत रूप से ही सौन्दर्ययुक्त होते चले। इसी प्रक्रिया के सातत्य से कालांतर में वास्तुकला, शिल्पकला, चित्रकला, काव्यकला, और संगीतकला जैसी ललित कलाओं का आविष्कार हुआ।

परिष्कृति एवं विकास के अगले स्तर पर इन कलाओं में निहीत सुन्दरता के विश्लेषण का शास्त्र बना, जो 'सौन्दर्य-शास्त्र' कहलाया । इस शास्त्र के अंतर्गत विद्वानों ने मनुष्य-हृदय के विभिन्न भाव, अनुभूतिओं के परिष्कृत एवं अभिव्यक्त रूप को 'रस' की संज्ञा देते हुए उसे ललित कलाओं का मूल तत्व, उनका हार्द माना है। अतः स्वाभाविक रूप से ललितकला में रस की उपस्थिति अनिवार्य है।

संगीत (गायन-वादन-नर्तन) भी ऐसी ही एक सौन्दर्यमय, रससभर ललितकला है । उसकी रसमयता पर ही उसका सौन्दर्य, उसकी उत्कृष्टि नीर्भर है । संगीत की रसमयता आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।

रसमयता के परिप्रेक्ष्य में संगीत (गायन-वादन-नर्तन) को समझने का प्रयास करते हुए कुछ प्रश्न मेरे मन में उपस्थित हुए, जिनका समाधान प्राप्त करने हेतु मैंने इस विषय पर विश्लेषणात्मक अध्ययन करना उचित समझा। प्रस्तुत शोधकार्य इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर किया हुआ प्रयास है।

<u>प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता</u> <u>(Need for the research on this topic)</u>

हम सब को ज्ञात है की संगीत एक ललित कला है I ललित कलाएँ मनुष्य मन की विभीन्न भावनाओं की अनुभूति की सौन्दर्यमय अभिव्यति का माध्यम हैं I अतः इन में सौन्दर्य एवं रस – जो कि मनुष्य मन की भावनाओं का सौन्दर्ययुक्त परिष्कृत रूप माना जाता है – की उपस्थिति अनिवार्य है I

मेरा अवलोकन रहा, कि किसी भी सांगीतिक प्रसंग – रियाज़, वर्गखंड शिक्षा, गुरु से तालीम, या रंगमंच प्रस्तुति के दौरान रस तत्त्व की उपस्थिति के प्रमाण में

अत्याधिक तफ़ावत पाया जाता है l कई बार संगीत का सौन्दर्य, उसकी रसमयता, परमानन्द की अनुभूति चरमसीमा पर होती है; कई बार सौन्दर्य का एहसास साधारण-सा होता है, कोई अलौकिक अनुभव नहीं हो पाता; और कई बार ऐसा भी होता है, संगीत बिलकुल नीरस मेहसुस होता है, रसभंग होता है l

नाद एवं लय अपने आप में अति आकर्षक होने से उनसे निर्मित कला संगीत की प्रस्तुति सामान्यतः चित्ताकर्षक होगी ही, पर उसका अर्थ यह नहीं है कि वह सौन्दर्य एवं रसमयता के परिप्रेक्ष्य में सदैव सम्पूर्ण होती है l इस परिपूर्णता के लिए गहन चिंतन आवश्यक है – ऐसी मेरी समज है l

प्राचीन संगीत का शास्त्र तत्कालीन रस-सिद्धांत को लक्ष्य में लेकर रचा गया था, उसमें रस संबंधी कुछ नियम निश्चित किये गए थे l कला में कालक्रम से काफ़ी परिवर्तन आए, परंतु रस-सिद्धांत और संगीत शास्त्र में अधिक परिवर्तन नहीं आया l नए रागों के संदर्भ में शास्त्र पक्ष रचा भी गया, तो उसमें रस तत्त्व को लेकर अधिक चर्चा नहीं की गई l भारतीय शास्त्रीय संगीत के वर्तमान रूप के साथ रस-सिद्धांत का क्या संबंध है, उस विषय पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया है, प्रकाश नहीं डाला गया है l इस विषय पर और सूक्ष्मता से काम करने की आवश्यकता है l अतः रस-सिद्धांत का वर्तमान भारतीय शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में अभ्यास करना, संगीत में रस तत्त्व की उपस्थिति के प्रमाण में जो तफ़ावत पाया जाता है उन परिस्थितिओं के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना, उनके संभवित हल पर विचार करना, सौन्दर्यशास्त्र के रससिद्धांत के क्रियान्वयन के वर्तमान परिप्रेक्ष्य के संभवित मार्ग ढूँढना मैंने

आवश्यक समझा । मेरा मानना है, कि सघन अभ्यास सौन्दर्य एवं रसमयता के परिप्रेक्ष्य में सांगीतिक प्रस्तुति की परिष्कृति के सुझाव की दिशा में कुछ न कुछ प्रदान अवश्य करेगा, अतः मैंने इस शोधकार्य को आवश्यक माना और इस विषय पर कार्य किया।

परिकल्पना (Hypothesis)

एक ललितकला होने के नाते संगीत स-रस हो, उसमें सौन्दर्य की उपस्थिति महत्तम कोटि की हो, यह इच्छ्नीय, अपेक्षित है।

भारतीय सौन्दर्यशास्त्र के रस-सिद्धांत का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके वर्तमान शास्त्रीय संगीत से संलग्न अनुभूति एवं अभिव्यक्ति से उसका संबंध समझना, जाँचना इस शोधकार्य की परिकल्पना है। सौन्दर्य एवं रसमयता के परिप्रेक्ष्य में सांगीतिक प्रस्तुति की परिष्कृति की दिशा में कुछ उपयोगी समझ कायम करना, संभवित सुझाव प्राप्त करना, तथा उनका क्रियात्मक प्रयोग संभव बनाने के मार्ग स्पष्ट करना इस शोधकार्य का प्रयास रहा।

इस शोधकार्य से मेरा तात्पर्य स्वयं को प्रस्तुत विषय में स्पष्ट करना था ही, उसके साथ वह अन्यों को कुछ उपयोगी हो, ऐसा मेरा नम्र प्रयास रहा।

माहिती एकत्रित करने की पद्धति (Data collection methodology)

१) विभीन्न पुस्तकालयों में विषय से संलग्न एवं उपयोगी ग्रंथो का अभ्यास करके आवश्यक माहिती एकत्रित की गई है।

२) प्रस्तुत विषय से संबंधित विविध प्रकार के लेख, शोध-पत्र, शोध-प्रबंध, टिप्पणियाँ, सामयिक इत्यादि का अभ्यास करके कुछ माहिती एकत्रित की गई है।

३) कुछ वेबिनार के माध्यम से विषय-संबंधी माहिती प्राप्त हुई है।

४) इंटरनेट की सहायता से कुछ माहिती एकत्रित की गई है।

५) कुछ विद्वान संगीतज्ञों तथा शास्त्रकारों का संपर्क करके उनसे प्रस्तुत विषय के लिए आवश्यक माहिती प्राप्त की गई है।

<u>साहित्य की समीक्षा</u> <u>(Review of literature)</u>

प्रस्तुत विषय से संलग्न विभिन्न स्रोत से एकत्रित माहिती को संबंधित विषय के विद्वान ज्ञाताओं द्वारा जाँचा व परखा गया है । अन्य शोधकर्ता द्वारा किये गए कार्यों की भी समीक्षा की गई है । अनुसंधान के लिए प्रासंगिक और सही माहितीओं को ही स्थान दिया गया है और अनावश्यक, अवांछित माहिती को त्याग दिया गया है ।

<u>उद्देश्य</u> <u>(Purpose)</u>

शास्त्रीय संगीत, संगीत के अन्य प्रकारों का मूल माना जाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को अध्यात्मलक्षी, दैवी कला माना गया है। प्राचीन ऋषि-मुनिओं द्वारा उद्भवित एवं विकसित इस कला के सिद्धांत अत्यंत सूक्ष्मता से, अत्याधिक प्रमाण में ऐसे ही बनाये गए, कि उनका अनुसरण सौन्दर्यपूर्ण, रसपूर्ण कला का निर्माण करें। यही कला और कला-सिद्धांत शतकों तक चले और सौन्दर्यानुभूति, रसानुभूति का माध्यम बनते रहे।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है, जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत को भी प्रभावित किया है। आधुनिक भारत का जो शास्त्रीय संगीत है, उसमें प्राचीन कालीन संगीत की अपेक्षा काफ़ी कुछ बदलाव है, जिनमें सैद्धांतिक पक्ष, कला पक्ष, तालीम की पद्धति, कलाकार की परिस्थिति एवं मानसिकता, रसिक की परिस्थिति एवं मानसिकता, इत्यादि अनेक पहलू समाविष्ट हैं। वर्तमान समय में ऐसा पाया जाता है, शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति का तरीका ऐसा होता है, कि कई बार उत्कृष्ट रस-निष्पत्ति होती है, तो कई बार रस-हानि भी होती है। परिणाम स्वरुप शास्त्रीय संगीत का चाहक वर्ग अन्य संगीत की तुलना में कम होता जा रहा है, जो कतई इच्छनीय नहीं है।

संगीत में रस तत्त्व की उपस्थिति के प्रमाण में जो तफ़ावत पाया जाता है, सौन्दर्य के परिप्रेक्ष्य में संगीत उच्च से लेकर साधारण कक्षा तक का पाया जाता है, उसके कारण समझने का प्रयास; उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन करके संभवित हल पर विचार; और सौन्दर्यशास्त्र के रस-सिद्धांत के वर्तमान परिप्रेक्ष्य से क्रियान्वयन के संभवित मार्ग की खोज इस शोधकार्य के उद्देश्य में समाविष्ट हैं।

इस शोधकार्य के माध्यम से प्रस्तुत विषय में निजी समझ, ज्ञान को बढ़ाने, परिष्कृत करने के साथ अन्यों को भी संकलित, आविष्कृत माहिती उपयोगी हो सके, यह मेरा उद्देश्य और अभ्यर्थना है।

शोधकार्य-पद्धति एवं योजना (Research methodology and planning)

इस शोधकार्य के लिए विभीन्न पुस्तकालयों में से विषय संलग्न ग्रंथों, लेख, शोध-पत्र, शोध-प्रबंध, टिप्पणियाँ, सामयिक इत्यादि का अभ्यास करके आवश्यक ज्ञान व माहिती का संकलन किया गया। कुछ विद्वानों से वार्तालाप, चर्चा, विचार-विमर्श करके विषय संबंधी ज्ञान अर्जित्त किया गया। कुछ उपयोगी ध्वनि-मुद्रण का चयन करके उनका विश्लेषणात्मक श्रवण, मूल्यांकन किया गया। इंटरनेट से भी कुछ माहिती उपलब्ध हुई है। उत्तम कलाकार, गुणी श्रोताओं तथा स्वयं के सांगीतिक अनुभवों का विषयोचित मूल्यांकन भी इस सन्दर्भ में उपयोगी सिद्ध हुआ।

उपरोक्त सभी स्रोंतों से संकलित माहिती का आवश्यकता अनुसार परस्पर तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना, मूल्यांकन करना, तथा प्रस्तुत विषय के परिप्रेक्ष्य में उसका सुयोग्य उपयोग करना, इत्यादि मेरी शोधकार्य-पद्धति एवं योजना में समाविष्ट रहा।

शोधकार्य की सीमा (Limitation of research)

इस शोधकार्य के अंतर्गत विद्वानों द्वारा संगीत-ग्रंथों में वर्णित रस-सिद्धांत, संगीत के दौरान होने वाली रस तत्त्व की अनुभूति तथा संगीत के माध्यम से होने वाली रस तत्त्व की अभिव्यक्ति का संगीत की विधाओं (गायन-वादन-नर्तन) के परिप्रेक्ष्य में विश्लेष्णात्मक अध्ययन किया गया है।

रस-सिद्धांत भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की देन है, अतः प्रस्तुत शोध में मुख्य रूप से भारतीय सौन्दर्यशास्त्र तथा कला संबंधी मतों के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, तुलनात्मक अध्ययन के लिए आवश्यकतानुसार पाश्चात्य तथा अन्य पूर्वीय मतों का संक्षेप में अभ्यास किया गया है।

रस तत्त्व के सैद्धांतिक आलेखन, अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का अध्ययन संगीत कला के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। तुलनात्मक दृष्टि से संगीत की विशिष्टता समजने हेतु अन्य ललितकलाओं की विशिष्ट लाक्षणिकताओं का संक्षेप में अभ्यास किया गया है।

रस-शास्त्र अति प्राचीन कला-सिद्धांतों में से एक है, जिस समय की कला की तुलना में वर्तमान कला काफ़ी परिवर्तित है। अतः वर्तमान संगीत के सन्दर्भ में रस-शास्त्र का अभ्यास करके उनके मध्य सायुज्य स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

शोधकार्य के अंतर्गत किया गया अध्ययन मुख्यतः उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में है।

संशोधन कार्य की रुपरेखा (Outline of research work)

"सांगीतिक विधाओं के परिपेक्ष्य में रस तत्व के सैद्धांतिक आलेखन, अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

प्रकरण १ : कला एवं उसमें निहित तत्व रस

इस प्रकरण के अंतर्गत ललित कलाओं से रस का क्या संबंध है, वह स्पष्ट किया गया है। सर्वप्रथम पाश्चात्य मतानुसार कला की परिभाषा, पूर्वीय मतानुसार कला की परिभाषा, कला संबंधी पाश्चात्य एवं पूर्वीय मतों की तुलना तथा कलाकार के लक्षण की विश्लेषणात्मक चर्चा की गई है। तत्पश्चात कला के प्रकार – उपयोगी (कारू) कला और ललित (चारू) कला तथा ललित कला के प्रकार – स्थापत्य, शिल्प, चित्र, साहित्य एवं संगीत की उनकी विशिष्ट लाक्षणिकताओं के सन्दर्भ में चर्चा की गई है तथा उनके परस्पर संबंध पर भी प्रकाश डाला गया है। उसके पश्चात 'रस' तत्त्व का प्राथमिक परिचय दिया गया है, उसका स्वरुप स्पष्ट किया गया है। अंत में कला और रस के अनिवार्य संबंध का स्पष्टीकरण किया गया है।

प्रकरण २ : रस का ऐतिहासिक विवेचन तथा अपने अंगों के साथ विस्तृत वर्णन

इस प्रकरण के अंतर्गत रस सिद्धांत के ऐतिहास तथा तकनिकी पक्ष को स्पष्ट किया गया है। सर्वप्रथम रस तत्त्व के आविष्कार तथा उसमें क्रमशः आए हुए परिवर्तन की चर्चा की गई है। उसके पश्चात भरत, भट्ट लोलट, शंकुक, भट्ट नायक, अभिनव

गुप्त, तथा अन्य प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक विद्वानों के रस संबंधी विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं स्पष्टीकरण किया गया है। तत्पश्चात रस के घटक स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव तथा व्याभिचारीभाव की विस्तृत चर्चा की गई है। रस के अन्य अंग – उसके देवता, वर्ण तथा चित्र की चर्चा की गई है। रस के घटक तत्त्वों का परस्पर क्या संबंध है, उनके मेल से किस प्रकार रस-निष्पत्ति होती है, उसकी चर्चा की गई है। अंत में नव (९) रस का अपने मूलभूत घटक तथा अन्य अंगों के साथ विवरण दिया गया है।

<u>प्रकरण ३ : संगीत की विधाओं के घटक तत्वों का सौंदर्य एवं रस से संबंध</u>

इस प्रकरण के अंतर्गत संगीत कला के रस तत्त्व के साथ के संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। सर्वप्रथम संगीत कला के लाक्षणिक वैशिष्ट्य का रस से क्या सायुज्य है, उस पर चर्चा की गई है। तत्पश्चात संगीत कला की तीनों विधाएँ – गायन, वादन तथा नर्तन में उपयुक्त मुख्य घटक तत्त्वों की चर्चा की गई है। इन घटक तत्त्वों – श्रुति, स्वर, राग, लय, ताल, पद, ध्वनि-गुण तथा अभिनय का रस से क्या संबंध है, उसका विश्लेषण किया गया है। इन घटकों के परस्पर सायुज्य से किस प्रकार रस-निष्पत्ति संभव है, उस पर प्रकाश डाला गया है। उल्लेखनीय है, कि घटक तत्त्वों के रस से शास्त्रोक्त संबंध को स्पष्ट करने के साथ वर्तमान क्रियात्मक वास्तविकता को भी लक्ष्य में लेते हुए विवरण किया गया है।

प्रकरण ४ : संगीत में रस के स्थान का वास्तविक मूल्यांकन

इस प्रकरण के अंतर्गत विशेषरूप से वर्तमान शास्त्रीय संगीत में निहीत रस का मूल्यांकन किया गया है। सर्वप्रथम संगीत में रसाभिव्यक्ति के माध्यम एवं रसानुभूति के कारण ऐसे तत्त्व, जो कि मूलभूत घटकों में प्राण का संचार करते हैं, उनका विश्लेषण किया गया है। इन तत्त्वों में तकनिक, बढ़त के पहलू, शैली, इत्यादि समाविष्ट हैं। तत्पश्चात सांगीतिक प्रस्तुति के दौरान होनेवाली रस-हानि के विषय में चिंतन किया गया है। रस-हानि के कारणों का विश्लेषणात्मक अभ्यास किया गया है।

प्रकरण ५ : सांगीतिक सौन्दर्य एवं रसमयता के परिप्रेक्ष्य में रचनात्मक विचार-विमर्श एवं संभवित सुझाव

इस प्रकरण के अंतर्गत संगीत कला की सौन्दर्यपूर्ण एवं रस-सभर प्रस्तुति के सन्दर्भ में विचार किया गया है। सर्वप्रथम सांगीतिक प्रस्तुति के सुन्दर एवं रसपूर्ण होने के विषय में कुछ रचनात्मक चिंतन प्रस्तुत किया गया है। इस सन्दर्भ में विभीन्न विद्वानों के मंतव्यों का विश्लेषण किया गया है। तत्पश्चात रस-हानि के कारणों के हल पर विचार किया गया है। अंत में यह सम्पूर्ण शोध लक्षी अध्ययन के सार स्वरुप रसमयता के परिप्रेक्ष्य में संगीत की उत्कृष्टि के विषय में कुछ संभवित सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

उपसंहार (Conclusion)

प्रस्तुत शोधकार्य विद्वानों द्वारा संगीत-ग्रंथों में वर्णित रस-सिद्धांत, संगीत के दौरान होने वाली रस तत्व की अनुभूति तथा संगीत के माध्यम से होने वाली रस तत्व की अभिव्यक्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने हेतु किया गया प्रयास है।

इसके अंतर्गत संगीत के दौरान रस तत्त्व की उपस्थिति के प्रमाण में पाये जाने वाले तफ़ावत के कारण समझकर, उनका विश्लेषण करके संगीत अधिक से अधिक स-

रस, रस-सभर कैसे संभव हो सकता है, उस प्रश्न का समाधान प्राप्त करने की कोशिश की गई । ग्रंथों में आलेखित रस-सिद्धांत के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सांगीतिक क्रियान्वयन के संभवित मार्ग की खोज इस शोधकार्य का लक्ष्य, ध्येय रहा।

इस शोधकार्य से निश्चितरूप से मेरा ज्ञान-संवर्धन हुआ है। इसके निमित्तरूप जो अध्ययन, चिंतन-मनन-मंथन, चर्चा, विचार-विमर्ष, विश्लेषण हुए, उनके फलस्वरूप उपलब्ध हुई माहिती का लाभ अन्यों को भी मिल सके, यही मेरी अभ्यर्थना है।

वैयक्तिक रूप से संगीत, गुरुजन तथा संगीत-जगत का अपने आप पर बहुत बड़ा रुण मेहसूस करती हूँ। यह शोधकार्य उन सभी से जो कुछ पाया है, उसीके माध्यम से इसी क्षेत्र में अपनी क्षमतानुसार कुछ योगदान देने की कोशिश है।

दिनांक :   /०८ /२०२०

स्थल : फेकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स,

धि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बरोड़ा।